PRESS RELEASE

LOK SABHA SPEAKER EMPHASIZES RELEVANCE OF DIALOGUE IN TODAY'S WORLD FRAUGHT WITH CONFLICT; HIGHLIGHTS INDIA'S DEEP-ROOTED DEMOCRATIC TRADITIONS/लोकसभा अध्यक्ष ने आज के संघर्षपूर्ण विश्व में संवाद की प्रासंगिकता पर जोर दिया; भारत की गहन लोकतांत्रिक परंपराओं के महत्व पर प्रकाश डाला।

….

LOK SABHA SPEAKER STRESSES ON DIALOGUE, DEMOCRACY AND ETHICAL LIVING AT MAHAVIR FOUNDATION EVENT/लोक सभा अध्यक्ष ने महावीरायतन फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संवाद, लोकतंत्र और नैतिक जीवन जीने पर जोर दिया

….

LORD MAHAVIR'S TEACHINGS AND INDIA'S DEMOCRATIC LEGACY OFFER PATH TO GLOBAL HARMONY: LOK SABHA SPEAKER/भगवान महावीर की शिक्षाएं और भारत की लोकतांत्रिक विरासत वैश्विक सद्भाव का मार्ग प्रशस्त करती है: लोक सभा अध्यक्ष

….

LOK SABHA SPEAKER ADDRESSES INVITEES AT MAHAVIR FOUNDATION EVENT ON 'SAMVAAD SE SAMADHAAN'/लोक सभा अध्यक्ष ने महावीरायतन फाउंडेशन के कार्यक्रम 'संवाद से समाधान-एक परिचर्चा ' में विशिष्ट सभा को संबोधित किया

….

Mumbai, 23 June 2025: Addressing a gathering at the Mahavirayatan Foundation on the theme 'Samvaad Se Samadhaan - Ek Paricharcha ' , Lok Sabha Speaker Shri Om Birla underscored the importance of dialogue, peace and democratic values in resolving contemporary challenges. He emphasized the lasting relevance of Lord Mahavir's teachings, while also highlighting India's identity as the mother of democracy, particularly as the nation celebrates 75 years of the Constitution.

Shri Birla observed that Lord Mahavir's message, though delivered over 2,500 years ago, still resonates deeply across societies. His principles of non-violence, compassion and self-discipline continue to guide individuals in navigating modern-day strife. Shri Birla emphasised that Lord Mahavir's teachings are not merely religious tenets, but a holistic way of life that promotes harmony, introspection and ethical conduct.

Drawing a parallel to contemporary issues, the Speaker noted that in a world marked by increasing conflict and instability, the relevance of dialogue has never been greater. Violence and confrontation, he said, cannot resolve our problems; instead, peaceful dialogue rooted in mutual respect is the only sustainable path forward. The message of 'Samvaad Se Samadhaan' is therefore not just philosophical, but deeply practical and necessary.

Transitioning to India's democratic journey, Shri Birla stressed that while independence was achieved in 1947, democracy has been practiced in India for centuries. India did not import democracy—it inherited and nurtured it from ancient traditions of consensus, public discourse, and community-led governance. Despite the post-independence challenges and uncertainties, India made a bold and determined choice to adopt democracy, a choice that has shaped the country's destiny.

He referred to Prime Minister Shri Narendra Modi's often-articulated belief that "democracy is the very soul of India." Shri Birla reaffirmed that sentiment, stating that democratic institutions in India are built on the foundational principles of discussion, cooperation, and accommodation. India's Parliament reflects this ethos—where diverse viewpoints are debated, and consensus is built through constructive engagement.

As the country celebrates 75 years of the Constitution, Shri Birla highlighted how India today stands as a beacon of democratic success. The world looks to India as a living example of how democracy, when practiced with commitment and inclusiveness, can ensure progress, stability, and national unity.

The Speaker called for a deeper appreciation of India's democratic legacy and the enduring wisdom of spiritual thought leaders like Lord Mahavir. Both traditions—one rooted in governance and the other in ethical living—emphasize the power of dialogue over discord, and compassion over conflict.

Chairman, Maharashtra Legislative Council, Shri Ram Shinde; Shri Milind Deora, MP and other dignitaries remained present on the occasion.

मुंबई, 23 जून, 2025: महावीरायतन फाउंडेशन में 'संवाद से समाधान-एक परिचर्चा 'में विशिष्ट सभा को संबोधित करते हुए, लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने समसामयिक चुनौतियों के निवारण में संवाद, शांति और लोकतांत्रिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने भगवान महावीर की शिक्षाओं की स्थायी प्रासंगिकता को रेखांकित किया और इसके साथ ही लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत की पहचान पर भी विचार व्यक्त किए।

श्री बिरला ने कहा कि हालांकि भगवान महावीर ने अपना संदेश 2,500 साल पहले दिया था, परंतु उनकी शिक्षाएं आज भी सभी समुदायों पर गहरा प्रभाव छोड़ रही हैं। अहिंसा, करुणा और आत्म-अनुशासन के उनके सिद्धांत आधुनिक समय के संघर्षों से निपटने में लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। श्री बिरला ने इस बात पर जोर दिया कि भगवान महावीर की शिक्षाएँ केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि एक समग्र जीवन शैली है जो सद्भाव, आत्ममंथन और नैतिक आचरण को बढ़ावा देती है।

समकालीन मुद्दों के बारे में बात करते हुए, अध्यक्ष महोदय ने कहा कि बढ़ते संघर्ष और अस्थिरता से प्रभावित विश्व में, संवाद की प्रासंगिकता पहले कभी इतनी अधिक नहीं रही जितनी अब है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंसा और टकराव से हमारी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता ; इसके बजाय, परस्पर सम्मान पर आधारित शांतिपूर्ण संवाद ही आगे बढ़ने का एकमात्र मार्ग है। इसलिए 'संवाद से समाधान' का संदेश केवल दार्शनिक नहीं , बल्कि व्यावहारिक और अनिवार्य भी है।

भारत की लोकतांत्रिक यात्रा के बारे में बात करते हुए, श्री बिरला ने इस बात पर जोर दिया कि हालाँकि हमें स्वतंत्रता 1947 में प्राप्त हुई थी, लेकिन भारत में लोकतंत्र सदियों से चला आ रहा है। भारत ने लोकतंत्र को कहीं बाहर से नहीं लिया बल्कि इसे आम सहमति, सार्वजनिक चर्चा और समुदाय के नेतृत्व वाले शासन की प्राचीन परंपराओं से विरासत में प्राप्त किया और इसका पोषण किया। स्वतंत्रता के बाद की चुनौतियों और अनिश्चितताओं के बावजूद, भारत ने लोकतंत्र को अपनाने का साहसिक और दृढ़ निर्णय लिया जो एक ऐसा निर्णय था जिसने देश की नियति को दिशा दी।

श्री बिरला ने इस बात का उल्लेख किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अक्सर कहते हैं कि "लोकतंत्र भारत की आत्मा है।" श्री बिरला ने उस भावना की पुष्टि करते हुए कहा कि भारत में लोकतांत्रिक संस्थाएँ चर्चा, सहयोग और समायोजन के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित हैं। भारत की संसद इस लोकाचार को दर्शाती है- जहाँ विविध विचारों पर चर्चा होती है, और रचनात्मक संवाद के माध्यम से आम सहमति बनाई जाती है।

श्री बिरला ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आज जब देश संविधान की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है, भारत लोकतांत्रिक सफलता का प्रतीक बन गया है। दुनिया भारत को इस बात का जीवंत उदाहरण मानती है कि प्रतिबद्धता और समावेशिता के सिद्धांत के अनुपालन से लोकतंत्र प्रगति, स्थिरता और राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित कर सकता है।

अंत में, अध्यक्ष महोदय ने भारत की लोकतांत्रिक विरासत और भगवान महावीर जैसे आध्यात्मिक विचारकों के शाश्वत ज्ञान को गहराई से समझने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि इन दोनों परंपराएं में से एक शासन में निहित है और दूसरी नैतिक जीवन में और ये टकराव की बजाय संवाद और संघर्ष की बजाय करुणा की शक्ति पर बल देती हैं।

इस अवसर पर महाराष्ट्र विधान परिषद के सभापति, श्री राम शिंदे, सांसद, श्री मिलिंद देवड़ा और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।